Roll No. : .....

Total No. of Questions : **13**] [Total No. of Printed Pages : **4**

SLA–201

B.A. Part–III Due of B.A. Part–II (Supplementary) Examination, 2022

HINDI LITERATURE

Paper - I

(रीतिकालीन काव्य)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– आठ में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द) :

   (i) केशव की 'संवाद योजना' की **चार** विशेषताएँ लिखिए।

   (ii) देव के शृंगार वर्णन की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(iii) सेनापति के 'प्रकृति-चित्रण' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(iv) कवि पद्माकर रचित किन्हीं **दो** ग्रन्थों के नाम लिखिए।

(v) घनानन्द की भक्ति का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

(vi) ''साँई सब संसार में, मतलब का व्यवहार'' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(vii) रीतिबद्ध तथा रीतिमुक्त काव्यधारा में अंतर स्पष्ट कीजिए।

(viii) रीतिकालीन कवियों ने कौनसी भाषा का प्रयोग किया ?

(ix) 'हरिगीतिका' छन्द को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(x) 'काव्य प्रयोजन' से क्या तात्पर्य है ?

खण्ड–ब

नोट :– निम्नलिखित आठ व्याख्या प्रश्नों में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (उत्तर-सीमा **200** शब्द) :

2. सिंधु तर्‌यौ उनको बनरा, तुमपै धनुरेख गई न तरी।
बाँदर बाँधत सो न बँध्यौ, उन वारिधि बाँधिके बाट करी॥
श्रीरघुनाथ प्रताप की बात, तुम्हें दस कंठ न जानि परी।
तेलह, तूलहु पूँछि जरी न जरी, जरी लंक जराइ जरी॥

3. मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परै, स्याम हरित-दुति होइ॥
बतरस-लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करैं भौंहन हँसै, दैन कहै नटि जाय॥
आवत जात न जानिए, तेजहि तजि सियरान।
घरहँ जँवाई लौं घट्‌यौं खरौ पूस-दिन मान॥

4. झहरि झहरि झीनी बूंदनि परति मानो,
घहरि घहरि घटा घिरी है गगन मैं।
आनि कह्‌यौ स्याम मो सों, चलो झूलिबे को आजु,
फूलि न समाती भई ऐसी हों मगन मैं॥

चाहत उठ्योई उठि गई सो निगोड़ी नींद,

सोइ गए भाग मेरे जागि वा जगन मैं।

आँखि खोलि देखी तो न घन है न घनस्याम,

छायी वेई बूँदें मेरे आँसू ह्वै दृगन मैं॥

5. कूलन में, केलिन, कछारन में, कुंजन में,

क्यारिन में, कलिन-कलीन किलकंत है।

कहै पद्माकर, परागन में, पौन हू में,

पानन में, पिकन, पलासन पगंत है॥

द्वार में, दिसान में, दुनी में, देश-देशन में,

देखो, दीप-दीपन में, दीपत दिगंत है।

बीथिन में, ब्रज में, नवेलिन में, बेलिन में,

बनन में, बागन में, बगरो बसंत है॥

6. सारंग धुनि सुनावै घन रस बरसावै,

मोर मन हरषावै अति अभिराम है।

जीवन अधार बड़ी गरज करनहार,

तपति हरनहार देत मन काम है॥

सीतल सुभग जाकी छाया जग सेनापति,

पावत अधिक तन मन बिसराम है।

संपै संग लीने सनमुख तेरे बरसाऊ,

आयौ घनस्याम सखि मानौं घनस्याम है॥

7. भुज भुजगेस की वै संगिनी भुजंगिनी सी,

खेदि-खेदि खाती दीह दारुन दलन के।

बखतर पाखरन बीच धँसि जात मीन पैरि,

पार जात परबाह ज्यों जलन के॥

रैयाराव चंपति के छत्रसाल महाराज,

भूषन सकै करि बखान को बलन के

पच्छी पर छीने ऐसे परे पर छीने बीर,

तेरी बरछी ने बर छीने खलन के॥

8. अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।

तहाँ साँचे चलैं तजि आपनपौं झिझकै कपटी जे निसाँक नहीं॥

घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक तै दूसरौ आँक नहीं।

तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ कहौ मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं॥

9. बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ।

जो बनि आवै सहज मैं, ताही में चित देइ॥

ताही में चित देइ, बात जोई बनि आवै।

दुर्जन हँसै न कोइ, चित्त में खता न पावै॥

कह गिरिधर कविराय, यहै करु मन परतीती।

आगे को सुख समुझि, होइ बीती सो बीती॥

खण्ड–स

नोट :– निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द) :

10. भाव पक्ष एवं कला पक्ष की दृष्टि से 'बिहारी सतसई' का विवेचन कीजिए।

11. क्या कविवर भूषण को राष्ट्रीय चेतना और स्वदेश प्रेम का अमर गायक कहा जा सकता है ? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

12. रीतिकाल के नामकरण विषयक मतों की समीक्षा करते हुए अपना मत प्रस्तुत कीजिए।

13. रीति काव्यशास्त्रानुसार नायिका के लक्षण लिखकर उसके भेदों पर प्रकाश डालिए।